

रसमसा वि. (देश.) 1. रस से पूर्ण, रसीला, रस से भरा हुआ, रस-सिक्त, रसमय, रस-मग्न, पसीने से युक्त, अनुरक्त, आनंदमय, मग्न, आनंदमग्न, रंग में मस्त 2. पसीने से भरा, श्रान्त, तर, गीला, जल से युक्त, आर्द्र, लथपथ।

रसमर्दन पुं. (तत्.) पारे को मारने या भस्म करने की क्रिया।

रसमल पुं. (तत्.) शरीर से निकलने वाले मल उदा. पसीना, कीचड़, थूक, मूत्र, विष्ठा आदि।

रसमाता स्त्री. (तत्.) रसमातृका, जीभ वि. रस या आनंद में मस्त, प्रेम में मत्त।

रसमारण स्त्री. (तत्.) पारा मारने या शुद्ध करने की क्रिया, पारा शुद्ध करना।

रसमूल वि. (तत्.) रसीला, आनंद का कारण।

रसमैत्री स्त्री. (तत्.) दो या अधिक रसों का उपयुक्त मेल, खाद्य वस्तुओं में दो रसों का उपयुक्त और स्वादिष्ट मिश्रण।

रसरंग पुं. (तत्.) 1. प्रेम में प्राप्त आनंद, कामक्रीड़ा का सुख, प्रेमपूर्ण क्रीड़ा, काम क्रीड़ा, कामकेलि, रतिक्रीड़ा 2. प्रेम की रीति, रसरीति।

रसराय पुं. (तत्.) काव्य. 1. रसराज, शृंगार रस 2. रसौत, पारा, पारे आदि के योग से बनाई जाने वाली औषध/रसायन 3. ताँबे की भस्म 4. गंधक।

रसराशि स्त्री. (तत्.) रस/आनंद की राशि, पुंजीभूत रस, घनीभूत सुख, आनंद का भंडार पुं. उपर्युक्त गुणों से युक्त व्यक्ति।

रसरी स्त्री. (देश.) रस्सी, रूई आदि के रेशों या डोरों को बँटकर बनी हुई लंबी डोर, गुण, रज्जु, डोरी।

रसरीति स्त्री. (तत्.) काव्य. 1. रसशास्त्र 2. प्रेम की रीति, प्रेम का व्यवहार 3. आस्वाद की रीति, भोग विलास की प्रणाली।

रसल वि. (तत्.) 1. रसीला, रस में भरा हुआ, रसयुक्त, स्वादिष्ट, मजेदार, रस या आनंद लेने वाला 2. बाँका, सुंदर।

रसवंती स्त्री. (तत्.) रसिका, रसिक स्त्री रसवती, प्रेमिका, पत्नी वि. 1. जिसमें रस हो, रसीली, रसयुक्त 2. रसमयी, सरस, रसवाली, रसजा, रसिका 3. स्वादिष्ट 4. पानी में भीगी हुई 5. सुंदर, भावपूर्ण, प्रेममय।

रसवत् पुं. (तत्.) काव्य. वह काव्यालंकार जिसमें एक रस किसी दूसरे रस अथवा भाव का अंग होकर आए।

रसवाद पुं. (तत्.) रसालाप, प्रेम या आनंद की बातचीत, रसिकतापूर्ण बात छेड़-छाड़, झगड़ा, बकवाद 2. मनोरंजन के लिए कृत्रिम कहा सुनी, छेड़-छाड़, प्रेमविवाद।

रसवान वि. (तत्.) 1. सरस, रसीला, मधुर, रस से युक्त, रसमय 2. स्वादिष्ट, जायकेदार 3. पानी से भीगा हुआ, पानी से परिपूर्ण, आर्द्र 4. मनोहर, सुंदर, भावपूर्ण, प्रेममय पुं. रसिक, रसज, रसिया, पति प्रेमी, आनंदप्रद व्यक्ति/वस्तु।

रसविरोध पुं. (तत्.) काव्य. रसों का अनुचित मेल, साहित्य में एक ही पद्य में दो प्रतिकूल रसों की स्थिति।

रसशास्त्र पुं. (तत्.) रसायन-शास्त्र, रसायनविद्या।

रसशोधन पुं. (तत्.) 1. सुहागा 2. पारे को शुद्ध करना।

रससिंदूर पुं. (तत्.) पारे और गंधक के योग से निर्मित की गई एक प्रकार की रसौषध।

रसहन वि. (तत्.) रसभंगी, रस को नष्ट करने वाला, विघ्नकर्ता पुं. सुहागा।

रसांतरण पुं. (तत्.) काव्य. रसांतर की क्रिया या भाव, रस-परिवर्तन, एक रस की स्थिति में दूसरे रस का आविर्भाव।

रसांतर्य पुं. (तत्.) काव्य. (नाट्य आदि में) नाटक आदि में रसानुभूति के लिए दर्शक अथवा श्रोता या पाठक का वस्तु विशेष से उपयुक्त अंतर।

रसौ वि. (फार.) पहुँचाने वाला, दूर जाने वाला उदा. चिट्ठी रसौ।